www.thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल. 0011/2012-14

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 70 अंक: 23
सृष्टि संवत् 1960853114
8 सितम्बर 2013
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रू.
आजीवन : 1000 रू.
दूरभाष : 2292926, 5062726
जालन्धर

वर्ष–70, अंक : 23, 5/8 सितम्बर 2013 तदनुसार 14 भाद्र सम्वत् 2070 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आओ! वेदोद्यान चलें

ले० श्री भद्रसेन 182-शालीमार नगर होशियारपुर

प्राचीन साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है, कि हमारे पूर्वज आर्य कहलाते थे। उन का धर्मग्रन्थ वेद था। जीवन को सार्थक बनाने वाले आर्य को समझने के लिए वर्षाकाल में वे वेद का विशेष स्वाध्याय करते थे। जो कि श्रावणी से विजयदशमी तक चलता था। इतिहास से भी यह सब पुष्ट होता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इस परम्परा को पुनर्जीवित करने के लिए 1875 में आर्य समाज की स्थापना की। इसीलिए उस का तीसरा नियम बनाया। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है। महर्षि ने वेद के प्रचार के लिए जहां आजीवन भिन्न-भिन्न नगरों में व्याख्यान दिए, वहां वेदभाष्य भी किया।

महर्षि की इस योजना को चरितार्थ करने के लिए आर्य समाज ने रक्षाबन्धन से जन्माष्टमी तक वेद सप्ताह का कार्यक्रम चलाया। आज भिन्न-भिन्न नगरों में एक साथ वेद सप्ताह आयोजित करने के लिए वेद के विद्वान मिलने कठिन हो रहे हैं। अत: आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब कुछ वर्षों से दो मास लगातार वेद प्रचार की विशेष योजना चलाती है। इसी दृष्टि से सभा की पत्रिका आर्य मर्यादा में वेद परिचय की यह लेखमाला दी जा रही है।

(गतांक से आगे)

जैसे एक रोगी जब चिकित्सक के पास जाता है, तब चिकित्सक रोगी के हाल को जानकर और केवल औषधि देकर ही उसको भेज नहीं देता, अपितु पथ्य-अपथ्य के साथ औषधि सेवन की विधि अवश्य ही बताता है कि इतनी औषधि इस समय ऐसे लेनी है। यदि चिकित्सक औषधि सेवन की विधि न बताए तो लाभ के स्थान पर हानि भी हो सकती है। इसी प्रकार परम चिकित्सक प्रभु ने स्वास्थ्य एवं सुख लाभ के लिए वेद के रूप में पथ्य-अपथ्य भी बताया। आजकल जैसे हम जब कोई यान या यन्त्र खरीदते हैं तो उसके प्रयोग करने का ढंग बताने के लिए उसकी प्रयोग-पुस्तिका भी साथ दी जाती है अर्थात् उस यन्त्र को प्रयोग करने का ढंग भी बताया जाता है। इसी प्रकार सृष्टि के पदार्थों से यथोचित उपयोग लेने के लिए वेद रूपी अक्षयकोश भी दिया गया, क्योंकि किसी भी यन्त्र की प्रयोग-प्रक्रिया को जाने बिना उसका उपयोग नहीं किया जा सकता।

1. वेद शब्द पर एक विचार-हमारा आपस के भावों के आदान-प्रदान का सारा व्यवहार शब्दों से ही होता है, क्योंकि परस्पर के भावों के संप्रेषण की शक्ति शब्दों में ही छिपी हुई है। इसी से सारा मानव समाज एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। अत: शब्द (भाषा) हमारे पारस्परिक व्यवहार का एक प्रमुख अंग है। अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हम जो शब्द बोलते हैं, वे तीन प्रकार के होते हैं। जैसे कि यौगिक, योगरूढ़, और रूढ़। यौगिक शब्द वे कहलाते हैं, जो प्रकृति-प्रत्यय के मेल से बनते हैं या किसी कारण के आधार पर जिन शब्दों का निर्माण या प्रयोग होता है। जैसे कि भोजन पकाने वाले को पाचक या रसोईया, घास काटने वाले को घसियारा, हल चलाने वाले को हाली। अत: ऐसे ही कारक, कर्त्ता, मालाकार, स्वर्णकार आदि शब्द हैं। ये स्वरूप की दृष्टि से प्रकृति-प्रत्यय के मेल से बने हैं और भाव की दृष्टि से इनका आधार भी है। जो भी उस-उस कार्य को करता है, उस योग, मेल के आधार पर उसी-उसी को ही उसी कार्य के नाम से पुकारा जाता है। योग का अर्थ है मेल, जोड़ और योग शब्द ही तद्धित=(उसके आधार पर बनने से) रूप में यौगिक हो जाता है। योग इसकी प्रकृति और इक इसका प्रत्यय है। ऐसे ही पाचक शब्द में पच धातु या प्रकृति है और (अ) क प्रत्यय है। अत: इन दोनों का योग, मेल पाचक कहलाता है।

बनावट की दृष्टि से-दूसरे प्रकार के शब्द हैं-योगरूढ़। ये शब्द भी बनते या प्रयुक्त तो पहले शब्दों की तरह ही हैं। परन्तु उस कार्य के कारण से सम्बन्ध रखने वालों में से किसी एक के लिए ही रूढ़-(निश्चित) हो जाते हैं। वैसा ही कार्य करने पर भी या वैसी ही स्थिति होने पर भी उस नाम, शब्द से दूसरा नहीं पुकारा जाता। जैसे कि जलज शब्द का शाब्दिक अर्थ है-जल से पैदा होने वाला। जल में बहुत सारी वस्तुएँ पैदा होती हैं पर केवल कमल को ही जलज, नीरज, अम्बुज कहा जाता है। ऐसी ही साधु, गौ, अश्व आदि शब्दों की भी स्थिति है। अर्थात् शब्द की बनावट या अर्थ की दृष्टि से वह शब्द अनेकों की ओर संकेत करता है, पर वह किसी एक के लिए रूढ़, निश्चित हो जाता है।

तीसरे प्रकार के शब्द हैं-रूढ़, ये शब्द किसी कारण या आधार पर न तो बनते हैं और न ही प्रयुक्त होते हैं, ऐसे ही प्रयुक्त किए जाते हैं। इनमें से अधिकतर शब्दों के प्रकृति + प्रत्यय का भी बोध नहीं होता। जैसे कि डित्थ, कपित्थ, कागज़, दवात तथा हमारे ऐसे नाम, जो बिना आधार पर बोले या रखे जाते हैं।

इन तीनों प्रकार के शब्दों में से वेद शब्द योगरूढ़ की श्रेणी में आता है। जैसे साधु शब्द का अर्थ है-अच्छा, परन्तु अब प्राय: केवल गेरवे वस्त्र धारण करने वाले संन्यासी के लिए ही प्रयुक्त होता है। ऐसे ही वेद शब्द का अर्थ है-ज्ञान, शास्त्र, लाभ, सत्ता, विचार क्योंकि वेद शब्द विद् धातु से बनता है। जो ज्ञान, लाभ, सत्ता और विचार अर्थ में है। वेद शब्द के विविध अर्थ होते हुए भी केवल ऋग्, यजु:, साम और अथर्व वेद के लिए ही पारिभाषिक रूप में प्रयुक्त होता है। परिभाषा सदा विशेष दृष्टि से ही होती है। वैसे तो आयुर्वेद, धनुर्वेद, पंचमवेद नाट्यवेद आदि में भी वेद शब्द का व्यवहार होता है। वेद शब्द को पारिभाषिक या योगरूढ़ न मानकर केवल यौगिक या ज्ञान के अर्थ में मानने से व्यवहार में अनिश्चय वाली स्थिति हो सकती है और इससे पारस्परिक भाव बोध का व्यवहार अस्त-व्यस्त हो सकता है। भारतीय साहित्य में अधिकतर वेद शब्द का प्रयोग ऋग्-यजु: आदि के लिए ही किया जाता है। (क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

व्रतमय जीवन जीना सीखो-यजुर्वेद

-ले० शिवनारायण उपाध्याय 73 शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा

आर्यों का जीवन व्रतमय होता है, वे व्रती होते हैं। मानवता के विकास के लिए जिन गुणों जैसे सत्य, अहिंसा, अस्तेय अपरिग्रह, शौच, सन्तोष ब्रह्मचर्य, तप, स्वाध्याय, परस्पर सहयोग, वात्सल्य, प्रेम आदि की आवश्यकता है, वे सब अपने जीवन में धारण कर लेते हैं। यजुर्वेद का प्रारम्भ भी सत्य को जीवन में धारण करने के व्रत से हुआ है।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि तच्छकेय तन्मे राध्यताम्।
इदमहमनृतात सत्यमुपैमि।
यजुर्वेद 1.5

अर्थात्-(अग्ने) हे अग्नि स्वरूप तेजस्वी प्रभो। (व्रतपते) आप सभी व्रतों के स्वामी हैं। सभी श्रेष्ठ गुण आप में ही आश्रय प्राप्त करते है। (व्रतम् चरिष्यामि) प्रभो। मैं भी एक व्रत धारण करने वाला हूँ। (तत्) उस (शकेयम्) व्रत का मैं पालन कर सकूं (तत मे राध्यताम्) मेरा यह व्रत सिद्ध हो, मैं इस व्रत का सदैव पालन कर सकूं, कभी भी खण्डन मेरे द्वारा न हो। (अहम्) मैं (अनृतात) असत्य को छोड़कर (इदम्) इस (सत्यम्) सत्य को (उपैमि) धारण करता हूँ।

व्रत को धारण करने के पश्चात् निडर होकर उसे जीवन में धारण करते रहना है-

मा भेर्मा संविक्थाऽअतमेरूर्यतोऽत मेरू र्यजमानस्य
प्रजां भूयात् त्रिताय त्वा द्विताय त्वै। यजुर्वेद 1.23

अर्थात्-(मा भेः) तू डर मत। अभय होकर रह। (मा संविक्थाः) तू उद्वेग से कम्पित मत हो। (यज्ञः) तेरा यज्ञ (अतमेरू) कभी श्रान्त होने वाला न हो, ग्लानि रहित श्रद्धावान् (प्रजा) सन्तान (भूयात्) तुझे प्राप्त हो। (त्वा) मैं तुझे (त्रिताय) ज्ञान कर्म और उपासना के विस्तार के लिए प्रेरित करता हूँ। (द्विताय त्वा) तुझे इन ज्ञान और कर्म का ही विस्तार करने के लिए कहता हूँ। (एकताय त्व) मैं तुझे ज्ञान के विस्तार के लिए ही प्रेरित करता हूँ।

इस मन्त्र में पहले ज्ञान कर्म और उपासना की प्रेरणा दी गई हैं और फिर इन तीनों में से भी ज्ञान और कर्म पर अधिक ध्यान देने को कहा गया है फिर इन ज्ञान और कर्म में भी ज्ञान की श्रेष्ठता होने के कारण ज्ञान के प्रचार-प्रसार एवं जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी गई है। वास्तव में संसार में ज्ञान ही सर्वश्रेष्ठ निधि है। सभी महापुरूषों एवं शास्त्रों का कथन भी यही है कि ज्ञान के अभाव में मुक्ति कभी भी संभव नहीं है। सांख्य में जिस ईश्वर के दर्शन के विषय में कहा गया है कि 'ईश्वरा सिद्धे' ईश्वर ज्ञानेन्द्रियों अथवा कर्मेन्द्रियों के द्वारा सिद्ध नहीं किया जा सकता हैं उस ईश्वर का प्रत्यक्षीकरण भी ज्ञान के द्वारा संभव माना जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ को श्रेष्ठतम कर्म माना गया है। यजुर्वेद में यज्ञ से मिलने वाले लाभों का वर्णन हुआ

वसो पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो धर्मोऽसि विश्व धाऽअसि
परमेण धाम्ना दृ ँहस्वमा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत्। यजु. 1.2.

अर्थ-(वसोः) यज्ञ से (पवित्र असि) तू पवित्र हुआ है। (द्यौः असि) तू प्रकाशमान जीवन वाला है। (पृथिवी, असि यज्ञ से तू अपनी शक्तियों का विस्तार करने वाला बना है। (मातरिश्वनः धर्मः असि) इस यज्ञ से तेरी प्राण शक्ति की वृद्धि हुई है। (विश्वधाः असि) यज्ञ से तू सबका धारण करने वाला बना है। (परमेण धाम्ना) उत्कृष्ट तेज से (द हस्व) तू अपने को दृढ़ बना। (मा ह्वाः) अपने जीवन में तू कुटिल गतिवाला मत बन। (ते) तेरे विषय में (यज्ञपतिः) इस सृष्टि यज्ञ का स्वामी परमात्मा (मा ह्वार्षीत्) कठोर नीति का अवलम्बन न करे।

यज्ञ के जो लाभ बताये गये हैं उनका अर्थ है कि हम नित्य यज्ञ करने का व्रत लें। यज्ञ के साथ वेदाध्ययन का भी वृत लिया जाना चाहिए।

सावित्रवायुः सा विश्वकर्मा सा विश्वाधायाः।
इन्द्रस्य त्वा भाग ँसोमेना तनच्मि विष्णो हव्य ँरक्ष।
यजु. 1.4.

अर्थ-हे (विष्णो) सर्व व्यापक प्रभो। आप जिस वेद वाणी का धारण करते हैं (सा) वह (विश्वायु) पूर्ण आयु देने वाली (सा) वह (विश्वकर्मा) सम्पूर्ण क्रिया कल्प के पूर्ण करने वाली और (सा) वह (विश्व धायाः) सम्पूर्ण जगत् को धारण करने वाली है। इसी से मैं (इन्द्रस्य) परमेश्वर के (भागम्) सेवनीय यज्ञ को (सोमेन) आनन्द से (आतनज्मि) अपने हृदय में दृढ़ करता हूँ तथा हे परमेश्वर। (हव्यम्) यज्ञ सम्बन्धी द्रव्य अथवा विज्ञान की (रक्ष) सदा रक्षा कीजिये।

हमें शाकाहार का भी व्रत धारण करना चाहिए।

धान्यमसिधिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।

दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो व सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि।
यजु. 1.20.

अर्थ-जो (धान्यम्) यज्ञ से शुद्ध, सुख का हेतु, रोग का नाशक चावल, यव आदि अन्न तथा (पयः) जल (असि) है। वह (देवान्) विद्वान् अथवा जीव और इन्द्रियों को (धिनुहि) तृप्त करता है। (त्वा) उसको (प्राणाय) अपने जीवन के लिए (त्वा) उसे (उदानाय) स्फूर्ति बल और पराक्रम के लिए, (त्वा) उसे (व्यानाय) सब शुभ गुण, शुभ कर्म अथवा विद्या के अंगो को फैलाने के लिए (दीर्घाम्) बहुत दिनों तक (प्रसितिम्) अत्युत्तम सुख बन्धन युक्त (आयुषे) पूर्ण आयु के भोगने के लिए (धाम्) धारण करता हूँ।

मनुष्य को एक परमात्मा के अतिरिक्त किसी की उपासना नहीं करना चाहिए। उपासना भी श्रद्धापूर्वक एवं नियमित करें। नित्य उपासना का भी व्रत लें।

त्र्यम्बंक यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्धनम्। ऊर्वारूकमिव-बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पतिवेदनम्। ऊर्वारूकमिव-बन्धनादि मुक्षीय मामुतः। यज. 3.60

अर्थ-हम लोग (त्र्यम्बकम्) ऋग्यजुः सामः मन्त्रों द्वारा ज्ञान, कर्म और उपासना देने वाले परमात्मा का (प्रजामहेः) पूजन करते हैं, निरन्तर स्तुति करते हैं। (सुगन्धिम्) वे प्रभु हमारे साथ उत्तम गन्ध सम्बन्ध रखने वाले.है। (पुष्टि वर्धनम्) हमारी सृष्टि का वर्धन करने वाले हैं। (मृत्योः) इस मरण धर्मा शरीर से (मुक्षीय) मैं इस प्रकार मुक्त हो जाऊँ (इव) जैसे पूर्ण परिपक्व हुआ (ऊर्वारूकम्) खीरा (बन्धनात्) बन्धन से मुक्त हो जाता है (मा अमृतात) मैं मोक्ष से छूटने वाला न होऊँ। (त्र्यम्बकम्) ज्ञान, कर्म और उपासना के उपदेष्टा प्रभु की (यजामहे) हम उपासना करते हैं। (पतिवेदनम्) मुझे सच्चे रक्षक को प्राप्त कराने वाले हैं। (बन्धनान्) नाना प्रकार के आकर्षण एवं बांधने वाले पितृगृह से कन्या जैसे शान्ति से जाती है (इव) जैसे कि (उर्वारूकम्) परिपक्व खीरा (खरबूजा) (बन्धनात्) बन्धन से अलग हो जाता है। (इतः) इस संसार के बन्धव से (मुक्षीय) मैं छूट जाऊँ। (माअमृतः) इस संसार से परे उस प्रभु से कभी अलग न होऊँ।

यजुर्वेद हमें बार-बार व्रती बनने की शिक्षा देता है।

व्रतं कृणुताग्नि र्ब्रह्माग्निर्यज्ञो वनस्पतिर्यज्ञियः।
दैवीं धियं मनामहे सुमृडीकामभिष्टये वर्चोधा यज्ञ वाहस ँसुतीर्थानो-ऽअसद्वशे
ये देवा मनोजाता मनोयुजो दक्ष क्रतवस्ते नोऽवन्तु तेनः पान्तु तेभ्यः स्वाहा। यजु. 4.11

अर्थ-हे मनुष्यों। (व्रतम् कृणुत) तुम व्रत करो। (व्रतन् कृणुत) व्रत करो। (ब्रह्म अग्निः) प्रभु तुम्हें आगे ले चलने वाले हैं। (अग्निः यज्ञः) यह यज्ञ अग्रणी है। हमारी उन्नति का कारण है। ब्रह्मयज्ञ एवं देव यज्ञ करते हुए हम ध्यान रखें कि (वनस्पति) वनस्पति ही (यज्ञियः) यज्ञ के योग्य बनाने वाली है। हम सात्विक भोजन के द्वारा (देवी धियम्) दैवी सम्पत्ति का वर्धन करने वाली बुद्धि को (मनामहे) मांगते हैं। (सुमृडीकाम्) जो उत्तम सुखों को देने वाली है। (अभिष्टये) यह सब इष्टों की प्राप्त कराने वाली है, (वर्चोधाम्) यह हमें अपवित्र भोग मार्ग से बचाती है। (यज्ञ वाहसम्) यज्ञों को प्राप्त कराने वाली है (सुतीर्था) उत्तम तीर्थ है। (नः) हमारी (वशे) इच्छा से (असत्) रहे।

(ये) जो (देवाः) देव (मनोजाताः) ज्ञान से विकास को प्राप्त हुए हैं। (मनोयुजाः) जो औरों को भी ज्ञान से जोड़ते हैं। (चाक्षुक्रतवः) शरीर व आत्मा के बल तथा प्रज्ञा व यज्ञ (क्रतु) से युक्त हैं, (ते) वे (देव, नः) देव हमें अवन्तु रक्षित करेंगे (तेग्वऽपान्सु) के हमें रोगों से भी बचाएं। (तेभ्यः स्वाहा) इन देवों के लिए हम अपने को समर्पित करते हैं। परमात्मा हमें व्रत के बन्धन में बांध कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाता है।

उदुत्तमं वरूण पाशमस्मद-वाधमं विमध्यमं श्रथाय।
यथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम।
यजुर्वेद 12.12

(शेष पृष्ठ 5 पर)

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय.....

सत्य धर्म के व्याख्याता-महर्षि दयानन्द

महापुरूषों को समझने में प्रायः संसार भूल करता आया है। विशेषतः उसके समग्र स्वरूप को तो वह समझ ही नहीं पाता। महर्षि दयानन्द इसके अपवाद नहीं। उन्हें भी समझने में संसार भूल करता रहा है। महर्षि दयानन्द वेदों के प्रकाण्ड विद्वान और व्याख्याता थे। उन्होंने संसार को बताया कि वेदः अखिलो धर्ममूलम् अर्थात् वेद धर्म के मूल हैं। वेद का धर्म ही सच्चा धर्म है और महर्षि दयानन्द इसी सत्य धर्म के व्याख्याता थे। उन्होंने धर्म के विकृत स्वरूप को परिष्कृत कर संसार के सामने रखा था। अतः वे यथार्थ में धर्म के संशोधक थे। हम उन्हें धर्म संस्थापक नहीं कह सकते क्योंकि उन्होंने किसी नवीन धर्म अथवा मत की स्थापना नहीं की थी। उनकी सुस्पष्ट घोषणा है कि- मेरा कोई नवीन कल्पना या मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं, किन्तु जो सत्य है, उसको मानना-मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना-छुड़वाना मुझको अभीष्ट है।

संसार के सभी प्रमुख मत-मतान्तरों की स्थापना के इतिहास पर यदि हम दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि आज तक जितने भी अपने आपको धर्म का संस्थापक कहलाने वाले हुए हैं, महर्षि दयानन्द उनसे सर्वथा अलग हैं। क्योंकि ये धर्म में संशोधन करने के नाम पर अपना नवीन मत चला बैठे, जबकि महर्षि दयानन्द ने ऐसा कुछ नहीं किया। परिणमस्वरूप संसार में अनेक मत-मतान्तरों की स्थापना हो गई और जितने मत-मतान्तर बढते गए उतना ही उनमें विरोध- वैमनस्य आदि भी बढते गए। महर्षि दयानन्द मानव की इस दुर्बलता से भली-भांति परिचित थे अतः वे इस दिशा में बड़े सावधान रहे। उनका कथन था कि जो मत-मतान्तर के परस्पर विरूद्ध झगड़े हैं उनको मैं पसन्द नहीं करता क्योंकि इन्हीं मत वालों ने अपने मत का प्रचार करने के लिए मनुष्यों को एक दूसरे का शत्रु बना दिया है। इस बात को काट सर्व सत्य का प्रचार कर सबको एकमत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुख लाभ पहुंचाने के लिए मेरा प्रयास और अभिप्राय है।

वैदिक धर्म के प्रति समर्पित इस महामानव ने मध्य युग में धर्म के नाम पर जो कुरीतियां प्रचलित हो गई थी, उन सबका निराकरण कर धर्म के सच्चे स्वरूप को संसार के सम्मुख रखा था। धर्म में मिलावट थी, महर्षि दयानन्द ने तर्क की चलनी चलाकर उसके विशुद्ध स्वरूप को संसार के सम्मुख प्रस्तुत किया था। न कि स्वयं कोई नवीन कल्पित मत चला कर धर्मगरू बन बैठे। यही महर्षि दयानन्द की विशेषता थी जो उन्हें अन्यों से अलग करती हैं। महर्षि बलपूर्वक लिखते हैं कि- यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों से पूर्व वेद मत से भिन्न कोई दूसरा मत नहीं था क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अवरूद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्या अंधकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया। महर्षि दयानन्द ने अपने सम्पूर्ण जीवन में सत्य का प्रचार किया है। उन्होंने सत्य की जो व्याख्या की है उसे जान लेना भी आवश्यक है। महर्षि के अनुसार जो पदार्थ जैसा है, उसको वैसा ही मानना, कहना और लिखना सत्य कहाता है। यह घोषणा उनके पूर्वाग्रह रहित होकर सत्य को स्वीकार करने की उनकी मनोवृति के परिचायक हैं। इसी मनोवृति का परिचय उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करते हुए उसके चौथे नियम में लिखा है- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। महर्षि दयानन्द ने सत्य सनातन वेद में शाश्वत सत्य के दर्शन किए थे। अतः वे सत्य के प्रति पूर्णतया समर्पित थे। उन्होंने जीवन में कभी असत्य से समझौता नहीं किया। यह उनकी अपनी विशेषता थी और न ही उन्होंने सत्य के प्रचार में असत्य का कभी सहारा लिया है। इतिहास साक्षी है कि सत्य की रक्षा के लिए उन्हें कितना बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा।

सत्य की भांति ही धर्म को भी उन्होंने हमें बता दिया था। आर्योद्देश्य रत्नमाला में वे लिखते हैं- धर्म जिसका स्वरूप ईश्वर की आज्ञा का यथावत पालन और पक्षपात रहित न्याय सर्वहित करना है। जो कि प्रत्यक्षादि प्रमाणों से तथा वेदोक्त होने से सब मनुष्यों के लिए यही एक धर्म मानने योग्य है। इससे बढकर धर्म की सीधी, सच्ची और तर्कपूर्ण और युक्तिपूर्वक व्याख्या भला क्या हो सकती है। वस्तुतः सहस्रों वर्षों के पश्चात ऐसा वेदवेत्ता उत्पन्न हुआ जिसने वेदों के नाम पर प्रचलित कुरीतियों, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासों, मिथ्या धारणाओं, अनाचारों पर प्रबल कुठाराघात करते हुए धर्म के मर्म को उजागर किया था। इतना ही नहीं उन्होंने धर्म को मत, मजहब, पन्थ और सम्प्रदाय के पंक से मुक्त कराया था। उन्होंने धर्म में तर्क को स्थान देकर संसार को चकित कर दिया था। वस्तुतः धर्म में तर्कबुद्धि का प्रयोग विश्व को महर्षि दयानन्द की देन है। तभी कविवर रामधारी सिंह दिनकर जी ने कहा था कि दयानन्द ने जो बुद्धिवाद की मशाल जलाई है, उसका कोई जबाव नहीं था। एक धर्म संशोधक के रूप में महर्षि दयानन्द का सबसे महत्त्वपूर्ण एवं सुविख्यात स्वरूप बताना हो तो कहना होगा कि उन्होंने उस धर्म का प्रचार किया है जो यद्यपि भावनाओं और विषय की दृष्टि से अत्यन्त पुरातन है तथापि युग की भावना के भी सर्वथा अनुरूप है। यह सर्वथा प्रगतिशील एवं विज्ञान सम्मत धर्म है। इसमें अन्धविश्वासों, मिथ्या आडम्बरों, कुप्रथाओं, कुरीतियों एवं तर्कहीन अवैज्ञानिक अनुष्ठानों का कहीं भी कोई स्थान नहीं है। धर्म का ऐसा उज्ज्वल स्वरूप संसार के सम्मुख प्रस्तुत कर महर्षि ने संसार का बड़ा उपकार किया है। वे वस्तुतः सत्यधर्म के व्याख्याता थे। आवश्यकता है उनके बताए धर्म के स्वरूप को ठीक से समझने की तथा उसके ऊपर चलने की जिससे समस्त संसार में सत्य वेद विद्या का प्रचार हो सके।

-प्रेम भारद्वाज सम्पादक एवं सभा महामंत्री

www.thearyasamaj.org

ब्रह्म का स्वरूप

-ले० स्वर्गीय श्री शान्तिस्वरूप गुप्त

राजा जनक स्वयं पूर्ण ब्रह्म-ज्ञानी थे। अत:, वे सभी तत्त्व-ज्ञानियों एवं ब्रह्मवेत्ताओं का हार्दिक आदर किया करते थे। एक बार घूमते-फिरते ब्रह्मर्षि याज्ञवल्क्य राजा जनक के पास आ पहुँचे। जनक ने पाद्य-अर्घ्य आदि से उनका स्वागत करके उनके शुभागमन का कारण पूछा-'भगवन् ! आप गौएँ लेने यहां पधारे हैं अथवा मुझे उपदेश देने।' 'मैं दोनों ही उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपस्थित हुआ हूँ राजन् !' ऋषि ने कहा-'किन्तु आपको ज्ञान प्रदान करने से पूर्व मैं यह जानना चाहता हूँ कि अब तक आपने इस विषय में क्या-क्या सीख रखा है ?' राजा बोले-'भगवन् ! मुझे शैलिनि जित्वा नामक ब्राह्मण ने यही उपदेश दिया था कि 'वाग्वै ब्रह्म इति' (वाणी ही ब्रह्म है)। वाणी से ही अर्थ का प्रकाश होता है इसलिए यहाँ वाणी को ही ब्रह्म बताया गया है।' ऋषि ने पुन: प्रश्न किया-'राजन् ! क्या उन्होंने आपको ब्रह्म के आयतन एवं प्रतिष्ठा (स्थान) के विषय में भी कुछ बताया है ?' जनक ने कहा-'न मे ब्रवीदिति' नहीं भगवन् ! इस सम्बन्ध में तो उन्होंने मुझे कुछ भी नहीं बताया। इस पर ऋषि ने कहा-'एकपाद वा एतत्'-राजन्! उसने तो आपको ब्रह्म के केवल एक पाद का ही उपदेश दिया है।' यह सुनकर जनक ने अनुरोध किया-'भगवन् ! आप पूर्ण समर्थ हैं। अब आप ही इस विषय का विस्तार-पूर्वक उपदेश दें।'

ऋषि कहने लगे-'राजन् ! वाग् इन्द्रिय ही वाणी का आयतन अथवा शरीर है और आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। अर्थात् ब्रह्म की सत्ता से ही हमारी वाक् इन्द्रिय अनेक शब्दों का प्रयोग करती है। अत:, आप प्रज्ञा नाम से वाग् रूप ब्रह्म की उपासना करें।' 'यह 'प्रज्ञा' क्या है ?' राजा ने प्रश्न किया। ऋषि ने समझाया-'यहाँ वाक् ही प्रज्ञा है। वेद-रूपी वाणी से ही सर्व-हितकारी परमात्मा का ज्ञान होता है। स नो बन्धुर्जनिता विधाता (यजु० ३२।१०) राजन् ! चारों वेद, इतिहास, पुराण, उपनिषद्, सूत्र, व्याख्यान, अनुव्याख्यान, नक्षत्रादि की विद्या, लोक, परलोक एवं सब भूतों का ज्ञान वाणी से ही होता है, अत:, वाक् इन्द्रिय ही सब से महान् है। जो इस प्रकार वाणी को ब्रह्म समझकर उसकी उपासना करता है, वह विद्वानों के मध्य देव के समान सुशोभित होता है।

ऋषि ने राजा से पुन: प्रश्न किया-'क्या इसके अतिरिक्त भी किसी ने इस विषय में आपको कुछ उपदेश दिया है ?' राजा ने स्वीकार किया-'हाँ ! भगवन्। शौल्वायन के पुत्र उदंक ने उपदेश दिया था- 'प्राणो वै ब्रह्मेति'' अर्थात् प्राणवायु ही ब्रह्म है।' ऋषि ने पूछा-'क्या प्राण के आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था ?' इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर पाकर ऋषि पुन: जनक को इस विषय का विस्तृत उपदेश देते हुए कहने लगे-'राजन् ! अध्यात्म वायु-सहित घ्राणेन्द्रिय (नासिका) ही उसका आयतन है एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता के बिना घ्राणेन्द्रिय कोई कार्य नहीं कर सकती। अत:, 'प्रिय' नाम से प्राण रूप ब्रह्म की उपासना करो। प्राण ही सब से प्रिय है एवं इसी की रक्षा के लिए मनुष्य विधि, निषेध आदि सभी कर्मों का सम्पादन करता है। अत:, जीवन का कारण और आधार होने से प्राण ही ब्रह्म है। जो इस प्रकार प्राण का महत्त्व जानकर उसकी उपासना करता है, उसकी कभी अपमृत्यु नहीं होती। सब भूत उसकी रक्षा करते हैं और प्राणवित् विद्वानों में वह सम्मान का भाजन बनता है।'

ऋषि पुन: राजा से पूछने लगे-'राजन् ! इस विषय में क्या इसके अतिरिक्त भी आपने कुछ सुना है ?' राजा ने कहा-'चक्षुवै ब्रह्म'-चक्षु ही ब्रह्म है, ऐसा मुझे वृष्णा के पुत्र वर्कु ने उपदेश दिया था।' क्या चक्षु के आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने आपको कुछ उपदेश दिया था ?' 'नहीं भगवन् ! आप ही अब इस अधूरे उपदेश को पूरा करें।' ऋषि ने कहा-'देखो, चक्षु इन्द्रिय ही उसका आयतन है एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही चक्षुरिन्द्रिय रूप का अनुभव करती है। आदित्य के प्रकाश में ही रूप देखना संभव है। अत:, 'सत्य' नाम से आदित्य की उपासना करो।' 'इसमें 'सत्य' क्या है ?' राजा ने प्रश्न किया। ऋषि ने उत्तर दिया-'चक्षु इन्द्रिय ही इसका सत्यापन है क्योंकि मनुष्य प्रश्न करते हैं-'अद्राक्षीरिति ?' क्या आपने देखा है ? उत्तर मिलता है 'अद्राक्षमिति'-हाँ, मैंने देखा है। यहाँ प्रत्यक्ष देखना सत्य है। यहाँ चक्षु की महत्ता उसके सत्य पदार्थ का ज्ञान होने के कारण ही है। जो मनुष्य इस प्रकार इस इन्द्रिय की महत्ता समझता है उसकी आँखों में कभी तिमिरादि दोष उत्पन्न नहीं होते। चक्षुर्वित् मनुष्य ही विद्वानों में प्रतिष्ठा पाता है।'

इतना उपदेश दे चुकने के पश्चात् ऋषि ने पुन: राजा से प्रश्न किया-'राजन् ! क्या इसके अतिरिक्त भी कभी आपने इस विषय में किसी से कुछ सुना है ?' राजा ने कहा-'श्रोत्रं वै ब्रह्मेति' (श्रोत्र ही ब्रह्म है) ऐसा उपदेश मुझे गर्दभी-विपीत नामक ब्राह्मण ने दिया था। ऋषि ने पूछा-'क्या उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था ?' जनक ने उत्तर दिया-'नहीं भगवन् ! इस विषय में तो उन्होंने कुछ नहीं बताया। अब आप ही विस्तारपूर्वक बता डालने की कृपा करें।' ऋषि कहने लगे-'श्रोत्रेन्द्रिय ही इसका आयतन है एवं आकाश ही इसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही श्रोत्रेन्द्रिय को शब्द ग्रहण करने की शक्ति मिली है। अत:, 'अनन्त' नाम से श्रोत्र की उपासना करो।' राजा ने पुन: प्रश्न किया-'इसमें अनन्तता क्या है ?' 'दिशाएँ अनन्त हैं राजन् ! पुरुष किसी भी दिशा में क्यों न जाए उसका अन्त नहीं मिलता। इस प्रकार जो पुरुष दिशाओं को अनन्त मानकर श्रोत्र-रूपी ब्रह्म की उपासना करता है उसे सर्वत्र शब्द-साक्षात्कार में परमात्मा की सत्ता का अनुभव होता है। ऐसे श्रोत्रवित् की विद्वान् बड़ी श्रद्धा करते हैं।'

इसके पश्चात् उसी प्रश्न को पुन: दुहराते हुए ऋषि ने राजा से प्रश्न किया-'राजन् ! क्या इस विषय में आपने अन्य किसी से कुछ सुना है ?' राजा बोले-'हाँ, जाबाला के पुत्र सत्यकाम ने मुझे उपदेश दिया है-'मनो वै ब्रह्मेति' (मन ही ब्रह्म है)। ऋषि कहने लगे-'उपदेश तो ठीक ही दिया है। मन के बिना प्राणी कर ही क्या सकता है ? किन्तु उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी क्या उन्होंने उपदेश दिया है ?' राजा ने निवेदन किया-'नहीं भगवन् ! इस विषय में तो आप ही सविस्तार उपदेश प्रदान करने की कृपा करें।' ऋषि बोले-'मन ही इसका आयतन है, एवं आकाश ही प्रतिष्ठा है'। परमात्मा की सत्ता से ही मन में संकल्प-विकल्प-रूपी वृत्तियाँ उठती हैं। अत:, 'आनन्द' नाम से इस मन की उपासना करो।' राजा ने पुन: प्रश्न किया-'इसमें आनन्दपन क्या है ?' ऋषि कहने लगे-'मन ही तो आनन्द का केन्द्र है। इसमें आनन्द की जो कल्पनाएँ उठती हैं वहीं इसका आनन्दपन है। जो मनुष्य इस प्रकार मन का महत्त्व समझकर इसकी उपासना करता है, उसके मन में दुर्विचार कभी उत्पन्न नहीं होते। इसी हेतु वह विद्वानों के मध्य सदा आदर प्राप्त करता है।

इसके पश्चात् ऋषि ने वहीं प्रश्न पुन: दुहराया-'राजन् ! क्या इसके अतिरिक्त भी इस विषय में आपने किसी से कुछ सुना है ?' राजा ने उत्तर दिया-'हृदयं वै ब्रह्मेति' (हृदय ही ब्रह्म है) ऐसा उपदेश मुझे शकल के पुत्र विदग्ध ने दिया था।' ऋषि ने कहा-'हृदय निश्चित रूप से प्रजापति है। ऐसा उपदेश उन्होंने ठीक ही दिया। किन्तु क्या इसके अतिरिक्त उसके आयतन एवं प्रतिष्ठा के विषय में भी उन्होंने कुछ बताया था ?' राजा कहने लगे-'नहीं भगवन् ! यह तो उन्होंने नहीं बताया।' अत:, ऋषि पुन: समझाने लगे-'हृदय ही उसका आयतन है एवं आकाश ही उसकी प्रतिष्ठा है। परमात्मा की सत्ता से ही हृदय बलवान् हो पाता है। अत:, 'स्थिति' नाम से इसकी उपासना करो।' राजा ने पुन: प्रश्न किया 'इसमें स्थितिपन क्या है ?' ऋषि ने कहा-'हृदय ही सब भूतों (प्राणियों) का आयतन तथा प्रतिष्ठा है। भूत इसमें प्रतिष्ठित हैं, इस कारण यह महान् है। जो ब्रह्म समझकर इसकी उपासना करता है वह पुरुष कभी हतोत्साह नहीं होता एवं विद्वानों के बीच प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।'

यहाँ महर्षि ने जो इन्द्रियों को ब्रह्म बताया है वह उपासना के अभिप्राय से नहीं वरन् ज्ञान के अभिप्राय से बताया है। अर्थात् वाग् आदि समस्त इन्द्रियाँ ब्रह्म-ज्ञान का साधन होने के कारण ही महान् हैं। यदि उन्होंने उपासना के अभिप्राय से कथन किया होता तो आयतन तथा प्रतिष्ठा का प्रश्न ही कहाँ उठता ? ब्रह्म का न तो कोई आयतन है और न प्रतिष्ठा। उपनिषदों ने केवल एक ब्रह्म को ही उपास्यदेव मानकर उसकी उपासना बताई है। 'अथ यो अन्यां देवतां उपासते' इन वाक्यों में अन्य देवताओं की उपासना का स्पष्ट निषेध है ही। इसी प्रकार केनोपनिषद् में भी 'तदेव ब्रह्म त्वं विद्धि नेदं यदिदमुपासते' एक मात्र ब्रह्म की ही उपासना की बात कही है। 'मनो वै ब्रह्म' का अभिप्राय यहाँ प्रतीकोपासना नहीं है। इसका अभिप्राय है कि मनस्वी पुरुष ही ब्रह्म-ज्ञान प्राप्त करने के वास्तविक अधिकारी हैं। वे ही, केवल वे ही उसका साक्षात्कार करने में समर्थ हो सकते हैं। महर्षि याज्ञवल्क्य से यह उपदेश सुनकर राजा जनक ने उन्हें एक सहस्त्र दुग्ध देने वाली हृष्ट-पुष्ट गौएँ देकर उनका सम्मान किया।

संकलनकर्त्ता-श्रीमती मृदुला अग्रवाल कोलकाता (क्रमश:)

www.thearyasamaj.org

स्वतन्त्रता दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल दीपक सिनेमा रोड़ लुधियाना के विशाल हाल में स्वतन्त्रता दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ध्वजारोहण की रस्म जिला आर्य सभा की प्रधाना श्रीमती राजेश शर्मा जी ने अदा की। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री अजय बत्रा जी थे। कार्यक्रम का आरम्भ गायत्री मंत्र से किया गया जिसे स्कूल की छात्राओं ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। फिर स्कूल की छात्रा संगीता ने आर्य समाज के दस नियम सुनाए, पंकज शर्मा ने तिरंगे झण्डे की महिमा पर अपने विचार प्रकट किए। इसके पश्चात्, स्कूल के विद्यार्थियों ने आई लव माई इंडिया गाने पर सुन्दर डांस पेश किया जिस पर पूरा हाल तालियों से गूंज उठा फिर नन्हें मुन्ने बच्चों रजत, रौनी, दीपांशु साहिल ने नन्हें मुन्ने बच्चे तेरी मुट्ठी में क्या है गीत पर डांस पेश कियाँ जिसे सबने खूब पसन्द किया इसके अलावा और भी बहुत सा सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किया। इसके पश्चात् सुरेन्द्र डाबर जी M.L.A ने आकर बच्चों के हौसला अफजाई की। और अपने भाषण में महर्षि दयानन्द जी की भूरी-भूरी प्रशंसा की कि आज़ादी की जद्दो जहद में आर्य समाज की विशेष भूमिका रही है। और उन्होंने स्कूल की उन्नति के लिए हर प्रकार की सहायता का आश्वासन दिया। स्कूल की प्रिंसीपल श्रीमती सुनीता मलिक ने आए हुए सभी मेहमानों का स्वागत किया और बच्चों की खूब प्रशंसा की और बच्चों को इसी तरह हर गतिविधि में बढ़चढ़ कर हिस्सा लेने के लिए और अपनी पढ़ाई पूरी लगन से करने के लिए प्रेरित किया। उस अवसर पर मैनेजिंग कमेटी के कई मैम्बर उपस्थित थे जिनके नाम इस प्रकार है। स्कूल के प्रधान श्री संत कुमार जी, कोषाध्यक्ष श्री सतपाल नारंग जी, देवपाल, आत्म प्रकाश, ब्रजेन्द्र भंड़ारी, अजय बत्रा, वैद्य बैणी प्रसाद, अरुण सूद, हर्ष आर्य, श्रीमती विनोद गाँधी, विजय सरीन, कृष्ण कुमार पासी, वजीर चन्द, आर-पी-गोयल, श्री रमाकान्त महाजन, श्री सुरेन्द्र आर्य आदि अनेकों माननीय सदस्य उपस्थित थे। उस अवसर पर अजय बत्रा जी ने बच्चों को मिठाई बाँटी और स्कूल की तरफ से बच्चों को बिस्किट बाँटे गए। श्रीमती विनोद गाँधी जी ने बच्चों की हौसला अफजाई के लिए सौ रुपये और जगदीश नारंग जी ने दो सौ रुपये दिए। राजेश बहन जी ने बच्चों को बताया कि यह आजादी हमें बड़ी कुर्बानियाँ देने के बाद मिली है और अब हमारा फर्ज है कि हम सब मिलकर इसे संभाल कर रखें। फिर भंडारी जी ने एक गीत गाया और आज़ादी पर अपने विचार रखे। इसके पश्चात्, प्रधान सन्त कुमार जी ने अपने भाषण में कहा कि आज़ादी की लड़ाई में सबसे पहली आवाज उठाने वालों में सबसे पहला नाम महर्षि दयानन्द जी का आता है और उन्होंने कहा कि हमें भ्रूण हत्या को रोकने के लिए ठोस कदम उठाने चाहिएँ। कार्यक्रम के अन्त में शान्तिपाठ के पश्चात् खाने पीने का उत्तम प्रबन्ध था।

श्रावणी उपाकर्म पर्व मनाया

आर्य समाज बरनाला में श्रावणी उपाकर्म एवं रक्षा बन्धन पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रोग्राम की अध्यक्षता आर्य समाज के प्रधान डा० सूर्य कान्त शोरी ने की। सर्वप्रथम पुरोहित रणजीत आर्य द्वारा संसार का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' सम्पूर्ण कराया। प्रोग्राम में गांधी आर्य हाई स्कूल, श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालिज बरनाला, दयानन्द केन्द्रीय विद्या मन्दिर, आर्य माडल स्कूल, गांधी आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल, एल. बी. एस सीनियर सैकण्डरी स्कूल स्टाफ, प्रबन्धक समिति सदस्य एवं विद्यार्थी शामिल हुए। प्रोग्राम को डा० सूर्यकान्त शोरी, भारत भूषण मैनन, बसन्त शोरी, रंजना मैनन, हरमेल सिंह जोशी, रामचन्द्र आर्य एवं राम कुमार सोबती ने सम्बोधित किया। इसके अतिरिक्त प्रोग्राम में शहर के गणमान्य व्यक्तियों में केवल कृष्ण जिन्दल, डा० नीलम शर्मा प्रिंसीपल आर्य महिला कालिज, डा० एच. कुमार कौल डायरेक्टर गांधी आर्य स्कूल, उर्मिला सिंगला प्रिंसीपल आर्य माडल स्कूल, सूरजमान, महामंत्री तिलक राम, शिव कुमार बत्ता के अतिरिक्त अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। वक्ताओं ने प्रोग्राम में सभा को सम्बोधित करते हुए श्रावणी उपाकर्म वैदिक विचार धारा पर बल दिया। वेद मन्त्रों का अध्ययन, स्वाध्याय, बड़ों का आदर, सन्त महात्माओं का आदर, ऋषि दयानन्द द्वारा चलाये वेदों के प्रचार को अपनाकर सत्य पर चलने पर बल, गरीब असहाय और अबला की रक्षा, पर बल दिया। राखी के शुभ अवसर पर लड़कियों, स्त्रियों को जागृति करके अपनी रक्षा स्वयं करने, भ्रूण हत्या को बन्द करने और पवित्र जीवन व्यतीत करने पर बल दिया। डा० शोरी ने सभी का धन्यवाद किया। शांति पाठ के साथ प्रोग्राम समाप्त हुआ।

-रामकुमार सोबती

पृष्ठ 2 का शेष- व्रतमय जीवन.....

अर्थ-(वरूण) हे व्रतों के बंधन में बांध कर हमारे जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाले प्रभो। (उत्तमम् पाशम्उत्) हमारे उत्तम बन्धन को हमसे बाहर क़ीजिए। (अस्मत्) इससे (अधमम्) नित्कृष्ट पाश को (अवश्रथाय) दूर करके ढीला कर दीजिए। हे वरूण। आप कृपा करके (मध्यमम्) रजो गुण युक्त बन्धन को भी (विश्रथाय) ढीला कर दीजिए। (अध) अब तीनों बन्धनों को ढीला करके (वयम्) हम, हे (आदित्य) सूर्य (परमात्मा) (तव व्रते) तेरे व्रत में (अनागस) निष्पाप होकर (अदितये) पूर्ण स्वास्थ्य के लिए और अन्त में मोक्ष के लिए (स्याम्) होवें।

यजुर्वेद व्रतों का लाभ बताते हुए कहता है:-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति-श्रद्धया सत्यमाप्यते। यजु. 19.30

अर्थ-(व्रतेन) व्रत के द्वारा (दीक्षाम्) दीक्षा को (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दीक्षया) दीक्षा द्वारा (दक्षिणाम्) दक्षिणा वा (आप्नोति) प्राप्त करता है। (दक्षिणा) दक्षिणा द्वारा (श्रद्धाम्) श्रद्धा को (आप्नोति) प्राप्त करता है (श्रद्धायाम्) श्रद्धा द्वारा (सत्यम्) सत्य को (आप्नोति) प्राप्त करता है।

भावार्थ-व्रत अर्थात् ब्रह्मचर्यादि नियमों से व्यक्ति सत्कर्मों का आरम्भ रूप दीक्षा, दक्षता, कुशलता को प्राप्त करता है। कार्य कुशलता से दक्षिणा अर्थात् प्रतिष्ठा एवं धन प्राप्त होता है। प्रतिष्ठा और धन के प्राप्त हो जाने से नियमों के प्रति श्रद्धा उत्पन्न होती है। यह श्रद्धा ही सत्य को प्राप्त करने का मुख्य साधन है। इसलिए हमें व्रती बनना चाहिए। इति।

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ
शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ, नजीबाबाद, जि० बिजनौर (उ.प्र.) के प्रांगण में मुख्याधिष्ठात्री आचार्य प्रियम्वदा वेदभारती जी के नेतृत्व में दिनांक 18 जुलाई से 28 जुलाई 2013 तक 'शास्त्रीय संगीत प्रशिक्षण शिविर' का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इस अवसर पर समस्तीपुर, बिहार से पधारे आर्य भजनोपदेशक संगीताचार्य पं. दयानन्द सत्यार्थी द्वारा कन्याओं को स्वर-साधना का शास्त्रीय संगीत के माध्यम से सम्यक् अभ्यास कराया गया जिनके आधार पर पौराणिक गीतों को निरस्त कर वैदिक ईश्वर-भक्ति का भजन-रागों पर आधारित गायन शैली बतायी गई जिसमें राग बहार, राग भैरवी, राग भैरव, राग यमन, राग मालकोश राग चन्द्रकोश आदि प्रमुख रहे। भजन-गायन के साथ-साथ सरगम, तान, अलाप, आरोह-अवरोह, तराना, नोम तोम, तननन धीं तनन, सम शून्य खाली पकड़ आदि का ज्ञान कराते हुए तीन ताल का पूर्ण अभ्यास कराया गया तथा सुगम संगीत की भी शिक्षा दी गयी। इसी क्रम में ऋपताल, एकताल, रूपक ताल, त्योरा ताल, कहरवा ताल, स्थायी, दादरा तालों का लिखित एवं प्रायोगिक ज्ञान कराया गया। प्रथम बाट इस तरह के शास्त्रीय गायन-प्रशिक्षण प्राप्त कर कन्यायें अभिभूत हुईं। फलत: कन्याओं में संगीत-विद्या सीखने की निरन्तर उत्सुकता बनी रही, तथा सबका ध्यान आकृष्ट हुआ। मुख्य रूप से भाग लेने वाली गुरुकुलीय कन्यायें सुश्री ब्र. कल्पना आर्या, कुमारी मनीषा आर्या, घोषा आर्या, बन्दना आर्या, शिवानी, अपाला, वरेण्या, श्रेया शीतल, प्रीति, रक्षा, दिव्या, सूर्या, वेदांशी, तनु, कनिक, राखी, वैशाली, अंजली कुमारी आर्या इत्यादि प्रमुख रहीं। प्रशिक्षण शिविर के अन्तिम दिन गुरुकुल कमेटी के अध्यक्ष, मंत्री, संस्कृत अध्यापक श्री रामेश्वर दयाल शर्मा, श्री रणजीत तिवारी, आचार्य प्रियम्वदा वेदभारती एवं श्रीमती गार्गी आर्या के द्वारा संगीताचार्य पं. दयानन्द सत्यार्थी-आर्य भजनोपदेशक (मो० 09955554078) तथा प्रसिद्ध तबलावादक श्री टीपू लाल आर्य को मन्त्रोच्चारणपूर्वक भव्य स्वागत-सम्मान के साथ विदाई दी गयी।

-आचार्य श्री गुरुकुल आर्ष कन्या विद्यापीठ कोतवाली मार्ग, निकट श्रवण नहर

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में कृष्ण जन्माष्टमी

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में कृष्ण जन्माष्टमी के उपलक्ष्य में रविवार 1 सितम्बर 2013 को प्रात: 8.00 बजे से 10.30 बजे तक एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सर्वप्रथम यज्ञ सम्पन्न हुआ जिसके यजमान श्री बाल कृष्ण जी शास्त्री थे। यज्ञ के बाद श्री विजय सरीन और अनिल कुमार जी के मधुर भजन हुए। यज्ञ एवं भजनों के उपरान्त कपूरथला से पधारे आचार्य देवराज जी मुम्बई वालों ने योगीराज श्री कृष्ण जी के गुणों का वर्णन करते हुए कहा कि वह चारों वेदों के ज्ञाता थे। महर्षि दयानन्द जी ने उन्हें आप्त पुरुष कहा। आज के दिन हम संकल्प लें कि हम वेद का स्वाध्याय करेंगे और वेद के प्रचार एवं प्रसार के लिए अपना पूरा सहयोग करेंगे। प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया।

www.thearyasamaj.org

आर्य समाज मेरी जीवनधारा

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल जी सभामंत्री से श्री डाक्टर देवेन्द्र जी से आर्य समाज सम्बन्धी वार्तालाप जो पाठकों की जानकारी के लिए दिया जा रहा है। आशा है पाठक इस वार्तालाप से लाभान्वित होंगे।

-सम्पादक

(गतांक से आगे)

मैंने कहीं पढ़ा है कि ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन काल में हिन्दी में लिखे वेद-भाष्य का उर्दू या अंग्रेज़ी में अनुवाद करने की आज्ञा प्रदान नहीं की।

पंडित जी-महर्षि दयानन्द पहले-पहल अपने व्याख्यान संस्कृत में दिया करते थे। परन्तु कालान्तर में उन्होंने इस कार्य के लिए जनमानस की भाषा हिन्दी को चुना। वे हिन्दी को देश की सम्पर्क भाषा मानते थे। वे मानते थे कि जिस भाषा को देश की 80% जनता समझती हैं, आर्य समाज का प्रचार उसी भाषा में किया जाए। इसीलिए सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण हिंदी में प्रकाशित किया क्योंकि पहले संस्करण में संस्कृत और हिंदी की क्लिष्ट शब्दावली थी। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि महर्षि संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे तथा संस्कृत व्याकरण के ज्ञाता थे। उन्होंने संस्कृत में विद्या ग्रहण की थी। वेदों के मन्त्रों की सम्यक व्याख्या करने के लिए संस्कृत का ज्ञान होना अनिवार्य है। अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है।

वे राष्ट्रीय एकता का आधार एक भाषा, एक भाव तथा एक धर्म को मानते थे।

महर्षि दयानन्द जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' की भाषा इतनी सरल कर दी कि डॉ. वी. आर. अम्बेदकर ने Thought of Pakistan पुस्तक में इस भाषा को आदर्श हिंदी माना है। काशी के राजा शिव प्रसाद एवं सर सैयद अहमद खां जैसे लोग जो हिंदी को गंवारों की भाषा कह कर उपहास किया करते थे, उन्हें महर्षि ने करारा जबाव दिया। महर्षि दयानन्द जी ने विशेष करके 'सत्यार्थ प्रकाश' की हिन्दी सरल बनाई है। अब इसको पढ़ने की इच्छा रखने वालों को कम से कम हिन्दी तो सीखनी ही पड़ेगी। इसलिए अनुवाद की आज्ञा नहीं देते थे। डॉ. साहब वैसे बात भी सच्ची और सीधी है कि यदि महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा को समझना है तो 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ना ही पड़ेगा और इसे पढ़ने के लिए हिंदी सीखनी ही पड़ेगी। वैसे आर्य समाज को अपना संदेश जन-साधारण तक पहुंचाने के लिए हर प्रान्त की मातृभाषा में पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए। यह कार्य हर प्रांत की आर्य प्रतिनिधि सभा कर सकती है।

(पंडित जी की पुत्र-वधू 'पंकज की पत्नी' ऋतु चाय बनाकर लाती है, पंडित जी की पत्नी श्रेष्ठा पंकज तथा ऋतु ने हमारे साथ सम्मिलित रूप से बैठकर कुछ अनौपचारिक बातें की। चाय के पश्चात् औपचारिक संवाद पुनः आरम्भ हुआ।)

पंडित जी क्या पंकज भी आपकी तरह आर्य समाज में पूर्ण उत्साह से सेवा करता है ?

(परिवार के सदस्य एक दूसरे की ओर देख कर मुस्करा रहे थे।)

पंडित जी-(जबाव टालने के अंदाज में) निजी बातें क्या करनी....

नहीं प्रश्न निजी अवश्य लगता है। चलो मैं भाषा बदल देता हूं। क्या युवक आर्य समाज में संतोषजनक सहयोग दे रहे हैं ?

पंडित जी-मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि यहां युवकों की भूमिका संतोषजनक नहीं है। यह आर्य जगत के लिए चिंता का विषय है। मैं यह भी स्वीकार करता हूं कि इसके लिए किसी सीमा तक हमारा नेतृत्व जिम्मेदार है।

आपने जब उंगली नेतृत्व पर उठाई है तो यह जानना आवश्यक हो जाता है कि नेतृत्व कैसे उत्तरदायी है ?

पंडित जी-आज का नव-युवक बहुत सतर्क एवं जागरुक है। ठीक है ? वह हर वस्तु को गौर से देखता है, परखता है एवं विश्लेषण करता है। वह देखता है प्रातः शिवलिंग पर जल अर्पण करने वाले, मन्दिरों में मूर्तियों के समक्ष नाक रगड़ने वाले आर्य समाज में घुसपैठ करके मठधारी कैसे बन जाते हैं। आर्य समाजियों की पारस्परिक गुटबन्दी व धड़ेबन्दी की बातें जब उनके परिवारों में होती रहती हैं तो युवकों के मनों पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

प्रौढ़ नेतृत्व संपूर्ण रूप से अधिकृत है। युवाओं को बनता स्थान न मिलना भी एक कारण हो सकता है। उनका निराश होना स्वाभाविक है।

हमारे सत्संगों का वातावरण भी पहले की भांति रोचक नहीं रहा। हमारे सन्यासी, विद्वान्, उपदेशक भी युवकों को पहले की तरह प्रभावित नहीं कर पा रहे।

हमारी शिक्षण संस्थाओं में आर्य समाजी मिशनरी भावना वाले अध्यापकों की भी कमी है। इन संस्थाओं में धर्म-शिक्षा लुप्त हो रही है। संस्कृत विषय की शिक्षा बंद होने के कगार पर है। अब आप पंकज या किसी अन्य नवयुवक की भूमिका का अंदाजा लगा सकते हैं।

जैसा आपने कहा कि नवयुवकों की आर्य समाज के प्रति घटती रूचि आप की चिंता है तो क्या आपके पास इसके हल के लिए कोई कार्यसूची (एजेंडा) है ?

पंडित जी-हां जी है। आर्य समाज को हवन यज्ञ के कर्म के साथ-साथ नवयुवकों को सही दिशा प्रदान करनी चाहिए, एवं इनकी शक्ति का समाज में कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए। आज समाज में कुरीतियां महर्षि दयानन्द जी के समय से भी अधिक है। मैं समझता हूं कि इन कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष के लिए युवा-वर्ग को आन्दोलन करने हेतु तैयार करना चाहिए।

आप जी को आज कौन सी सामाजिक कुरीतियां लग रही हैं ?

पंडित जी-यदि आर्य समाज जन-साधारण की समस्याओं की बात करेगा तभी लोग जुड़ेंगे, जैसे नशा वृद्धि का रूझान, भ्रूण-हत्या, महिलाओं व बच्चों का शोषण, वैश्यावृत्ति, दहेज, अश्लीलता का बढ़ता रुझान, पश्चिमी सभ्यता के प्रभावाधीन फैशन-शो, समलिंगी विवाह, धर्म परिवर्तन, वहम-भ्रम, गोहत्यादि। इन समस्याओं को आर्य समाज को अपनी कार्य-सूची में लाना पड़ेगा। बस आवश्यकता है युवकों व युवतियों को आर्य समाज के इन कार्यक्रमों में सहभागी बनाना।

महर्षि दयानन्द जी अपने समय में आर्य समाज की कार्यसूची को जन-साधारण के बीच ले जाते थे, मैंने सुना है कि ऋषि जी ने लाखों भारतीय लोगों के हस्ताक्षर करवा कर महारानी विक्टोरिया को स्मृति पत्र दिया था जिस में जन-साधारण का आक्रोश प्रकट हो रहा था। वह मुद्दा क्या था ?

पंडित जी-हां, वह गो-हत्या के विरुद्ध भारतीयों के आक्रोश की गूंज थी। आर्य समाज गाय को भारतीय व्यवस्था की रीढ़ की हड्डी मानता है। महर्षि जी ने गौ-रक्षा एवं कृषि विकास हेतु एक अलग गौ-कृष्णयादि रक्षणीय सभा भी बनाई थी। यहां तक कि महर्षि जी ने अपनी लिखी पुस्तक 'गौ करुणा निधि' में लिखा है। गौ का अर्थ है पालने वाली। देश की प्रथम गौशाला सन् 1875 में रेवाड़ी (हरियाणा) में महर्षि जी द्वारा स्थापित की गई थी। तत्पश्चात् देशभर में अनेक गौशालाएं आर्य समाज की ओर से बनाई गईं।

विक्टोरिया का राजनैतिक दूत कर्नल ब्रुक जब अजमेर के गर्वनर जनरल के पद से सेवा निवृत हुए, तब उसके विदायगी समारोह में ऋषि जी ने कहा था-"जरनल ब्रुक! इंग्लैंड जा कर विक्टोरिया को कह देना यदि अंग्रेज़ों ने भारतीयों के धर्म में हस्तक्षेप जारी रखा और गौ-हत्या समाप्त न की तो एक बार फिर से 1857 की क्रांति दुहराई जाएगी।"

(सत्यार्थ प्रकाश के दशम् समुल्लास से हवाला देते बतलाया)

"जितनी बुद्धि का विकास गाय का दूध पीने से होता है, भैंस के दूध पीने से नहीं। इस प्रकार गाय का दूध अधिक हितकारी हैं।" भारतीय संस्कृति का आधार गीता, गायत्री, गंगा और गाय है। 'गावो विश्वस्य मातर' गाय को विश्व की माता कहा है। महर्षि जी ने वेद वाणी का यह सन्देश विक्टोरिया तक पहुंचाया था। विनोबा भावे जी ने तो गो-हत्या के विषय में कानून न बनाए जाने के कारण 01-01-1979 से गाय का दूध पीना बन्द कर दिया था। वे कहते थे कि यदि मैं गो-हत्या रोक नहीं सकता तो मुझे कम से कम दूध पीने का कोई अधिकार नहीं। **(क्रमशः)**

www.thearyasamaj.org

महिला आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत का 27वाँ "पारिवारिक वेद प्रचार" सप्ताह सानन्द सम्पन्न

महिला आर्य समाज देसराज कालोनी पानीपत के तत्वावधान में पारिवारिक वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन दिनांक 4 अगस्त से 11 अगस्त सन् 2013 तक आयोजित किया गया। यह आयोजन प्रति वर्ष अलग अलग 14 परिवारों में किया जाता है जिससे अधिक से अधिक लोग वेद वाणी का श्रवण कर आर्य विचार धारा से लाभ उठा सके, आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों को घर घर पहुँचाना हमारा लक्ष्य है।

दि० 11 अगस्त को समापन समारोह की अध्यक्षता डॉ० बी. बी. शर्मा (प्राध्यापक आर्य महाविद्यालय) पानीप्रत ने की। श्री बृजकिशोर शास्त्री जी के निर्देशन में, निर्मला वसु, चन्द्रकान्ता वर्मा, दर्शना शर्मा एवं अरविन्द सैनी ने यज्ञ सम्पन्न किया। ध्वजारोहण श्री रणवीर सिंह जी आर्य वीर के करकमलों से हुआ। श्री इन्द्रजीत बत्रा, आत्म प्रकाश आर्य, नवनीत सिंगला, सुरेश-पराशर एवं सुमित्रा अहलावत ने दीपक की सप्तज्योति प्रज्वलित कर तमसो मा ज्योर्तिगमय का संदेश दिया। राजस्थान से पधारे श्री ओम प्रकाश जी राघव भजनोपदेशक ने प्रभु भक्ति, देश भक्ति व महर्षि दयानन्द के यशगान से सभी को सराबोर कर दिया। प्रि. स्वदेश कुमार शास्त्री ने संस्कृत एवं संस्कृति की रक्षा के लिये वेदों को अपनाने पर जोर दिया। आ० ओमप्रकाश शास्त्री ने बल की महत्ता को दर्शाते हुए कहा हमारे पूर्वज बल की उपासना करते थे, मर्यादा पुरुषोत्तम राम, योगीराज श्रीकृष्ण, महावीर हनुमान आदि बल की उपासना करते थे, बल से ही हमारे देश की स्वाधीनता अक्षुण्ण रह सकती है। डॉ. दर्शनलाल आजाद की ओजस्वी कविताएं भी हुई।

इस समारोह की मुख्य अतिथि नगर निगम पार्षद एवं डिप्टी मेयर श्रीमती सीमा पाहवा व श्री राज कुमार पाहवा रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ. श्री नरेश पाहूजा व श्रीमती डॉ. वन्दना पाहूजा रहे। आर्य समाज देसराज कालोनी के संस्थापक, संरक्षक पं. जगदीश चन्द्र वसु के सान्निध्य में माता विद्यावती सिंगला, ओम प्रकाश राघव भजनोपदेश श्री सुरेश पाराशर, श्री राजकुमार पाहवा, श्री राजकुमार कम्बोज (दह्म) श्री हरीश शर्मा-निगमपार्षद को शॉल व ओम पटके, स्मृति चिन्ह आदि से सम्मान किया गया। पं. राजकुमार जी शर्मा ने मंच का सफल संचालन किया। आ. स. के उत्साही सेवाभावी मन्त्री श्री राजेश कुमार आर्य ने समस्त कार्यक्रम को सफल बनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। श्री राजेन्द्र कुमार पाल, श्रीमती कान्ता नागपाल, श्रीमती प्रेम बत्रा, सुषमा मल्होत्रा, श्री श्याम सिंह आर्य अरविन्द सैनी, चन्द्रकान्ता वर्मा, कौशल वर्मा आदि की उपस्थिति से समारोह की शोभा द्विगुणीत हो गयी, अंत में निर्मला वसु ने सभी का धन्यवाद किया।

गुरुकुल हरिपुर द्वारा प्रचार एवं अन्न-वस्त्र वितरण

गुरुकुल हरिपुर विगत साढ़े तीन वर्षों से विभिन्न प्रकार से भारत के विभिन्न प्रान्तों के ऐसे इलाकों में जहां अब तक सरकार की ओर से बिजली, सड़क और पानी की समुचित व्यवस्था नहीं हो पाई, आर्य प्रतिनिधि सभाओं एवं आर्यसमाजों की ओर से वैदिक धर्म के प्रचार की व्यवस्था नहीं हुई है उन इलाकों में पहुंचकर के प्रचार एवं सहयोग कर रहा है। इसी श्रृंखला में गत 9-10 अगस्त को गुरुकुल हरिपुर के तत्वावधान में तथा जन सहयोग से झारखण्ड प्रान्त के सीमडेगा जिला के कुरडेग विकासखण्ड के लिटीमारा, कसडेगा और गाताडीह को केन्द्र बनाकर विभिन्न 20 के लगभग गांवों के सहस्राधिक लोगों को वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को बताया गया और वैदिक जीवन जीने के लिये उपदेश दिया गया। उपदेश से प्रभावित होकर कुछ परिवारों ने मांस, मदिरा एवं अन्य मादक द्रव्यों का सेवन न करने का लिखित संकल्प लिया। वितरण के अन्तर्गत 600 निर्धन प्रत्येक परिवार को 25-25 किलो चावल जिसका मूल्य 20 /- प्रति किलो के दर से 500 /- तथा एक साड़ी जिसका मूल्य 200 /- है। इस प्रकार एक परिवार को कुल 700 /- की सहायता प्रदान करने की व्यवस्था जन सहयोग से की गई थी। ध्यान रहे यह वह इलाका है जहां राष्ट्रविरोधीतत्व गांव-गांव में पनप रहे हैं तथा ईसाइयों का भी जबरदस्त बोलबाला है। यह समस्त कार्यक्रम सेवावीर महात्मा वानप्रस्थ श्री सत्यनारायण जी आर्य (कोलकाता) के आशीर्वाद से तथा गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य एवं दिलीप कुमार जिज्ञासु के प्रत्यक्ष देख-रेख में सौहार्दपूर्ण वातावरण में निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज नवांशहर द्वारा वेद प्रचार एवं जन सम्पर्क अभियान चलाया

आर्य समाज, नवांशहर की ओर से 21 अगस्त से 28 अगस्त तक वेद प्रचार एवं जनसम्पर्क अभियान चलाया गया। प्रत्येक वर्ष रक्षाबंधन से जन्माष्टमी तक चलने वाले इस अभियान में वेद प्रचारक अमित कुमार शास्त्री ने लोगों को वेदों की महिमा के बारे में व्याख्यान दिए।

कार्यक्रम के संबंध में जानकारी देते हुए आर्य समाज के प्रधान श्री प्रेम कुमार भारद्वाज व मंत्री जिया लाल शर्मा ने बताया कि इन आठ दिनों के दौरान शहर के विभिन्न गली मोहल्लों में हवन यज्ञ कर लोगों को वैदिक संस्कृति से जोड़ा गया। उन्होंने बताया कि वेदों में रक्षा बंधन से लेकर जन्माष्टमी तक के दिनों को आत्मचिंतन के लिए महत्त्वपूर्ण माना गया है तथा इस पर्व को श्रावणी पर्व के रूप में मनाया जाता है। उन्होंने बताया कि इस कड़ी में 21 अगस्त बुधवार को रक्षाबंधन वाले दिन एडवोकेट हरमेश लाल के शिवालिक इंकलेव, चंडीगढ़ रोड शाम 5 बजे हवन यज्ञ हुआ, 22 अगस्त को शुगर मिल कालोनी में चीफ इंजीनियर कृष्ण मोहन सिंह के निवास, 23 अगस्त को पूर्व पार्षद कुलवंत कौर के निवास व शनिवार 24 अगस्त शाम को न्यू फ्रेंडस कालोनी सतीश सेठ के निवास पर हवन यज्ञ हुआ। इसी कड़ी में रविवार सुबह 10.30 बजे प्रो. कृष्ण लाल गोयल के विकास नगर, सलोह रोड पर तथा 26 अगस्त को पंडोरा मोहल्ला में श्री बीआर मल्होत्रा के निवास तथा 27 अगस्त को प्रि. बलिहार सिंह के राहों रोड स्थित निवास पर हवन यज्ञ हुआ। जन्माष्टमी के अवसर पर चंडीगढ़ रोड स्थित श्री केएन सिंह के निवास पर सुबह 10 बजे हवन यज्ञ हुआ। इस दौरान आर्य विद्वानों योगीराज श्री कृष्ण के जीवन पर प्रकाश डाला। -अरविंद नारद, प्रचार मंत्री, नवांशहर

श्रावणी एवं यज्ञोपवीत कार्यक्रम

आर्यसमाज, आर्ष गुरूकुल नोएडा व दिल्ली संस्कृत अकादमी के संयुक्त आयोजन में शनिवार 31 अगस्त व 01 सितम्बर रविवार को आर्यसमाज नोएडा के तत्त्वावधान में श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ एंवं नवप्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। जिसमें चतुर्वेद पारायण यज्ञ व अन्तर्गुरूकुलीय संस्कृत श्लोक गीतागायन व अन्तर्गुरूकुलीय संस्कृत भाषण प्रतियोगिता, भजन, प्रवचन एवं विद्वत् संगोष्ठी के कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें अनेक आर्यजगत् के विद्वानों व गुरूकुलों के ब्रह्मचारी/ब्रह्मचारिणियों द्वारा अपनी प्रतिभा को उजागर करने का अवसर प्राप्त हुआ।

-मन्त्री आर्य समाज नोएडा

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्द गढ़ जालन्धर का वेद सप्ताह (श्रावणी उपाकर्म) 19 अगस्त से 25 अगस्त 2013 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रतिदिन प्रात: हवन, यज्ञ, भजन, वेदोपदेश होते रहे। सायं काल वेदोपदेश एवं भजन होते रहे। वेद सप्ताह यज्ञ के आचार्य रमेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। भजन श्री अरूण शुक्ला जी एवं माता आनन्दा यति द्वारा होते रहे दोनों ने अपने मंधुर भजनों से आये हुए लोगों को भावविभोर कर दिया। भजनों के उपरान्त पूज्यपाद स्वामी सवितानन्द जी सरस्वती (राँची) द्वारा वेदोपदेश सरल रूप में व्याख्या करके लोगों को वेद मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित किया।

25-8-13 को मुख्य समारोह यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। कई याज्ञिक परिवारों ने परिवार सहित यज्ञमान बन कर यजुर्वेद के मन्त्रों का पाठ करते हुए यज्ञ को सम्पन्न किया। पूर्णाहुति के पश्चात् मुख्य कार्यक्रम आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम श्री अरूण कुमार शुक्ला जी ने प्रभु भक्ति का सुन्दर भजन सुनाया। इसके प्रश्चात् स्वामी राम मुनी जी ने सुन्दर भजन सुनाया। इसके पश्चात् माता आनन्दयति जी ने सुन्दर भजन सुनाया। सभी के भजनों से लोग आनन्दित हुए। भजनों के उपरान्त पूज्यपाद स्वामी सवितानन्द जी का प्रवचन हुआ जिस में उन्होंने वेदों के महत्त्व के बारे में बताया कि वेद हमारी संस्कृति का आधार है। वेदों के स्वाध्याय द्वारा हम अपने अज्ञान को दूर कर सकते हैं। और सुखी जीवन बिता सकते है। अन्त में आर्य समाज के प्रधान श्री नरेश कुमार मल्हन जी ने सब का धन्यवाद किया। कार्यक्रम का संचालन आर्य समाज के पुरोहित आचार्य रमेश कुमार शास्त्री जी ने किया। शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ। इस कार्यक्रम को सफ़ल बनाने के लिए आर्य समाज के सभी अधिकारियों एवं महिलाओं ने पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। -राज कुमार गुप्ता संयुक्त मन्त्री

www.thearyasamaj.org

वेद वाणी

गूहता गुह्यं तमो, वि यात विश्वमत्रिणम्।
ज्योतिष्कर्त्ता यदुश्मसि।। -ऋ० १।८६।१०

विनय-हे मरुत देवो ? हे प्राणो ? हम अँधेरी गुफा में पड़े हुए हैं। चारों तरफ अँधेरा ही अँधेरा है। इस अँधेरे में खा-जानेवाले राक्षस हमें सता रहे हैं, हमें खाए जा रहे हैं; इन्हें भगाओ ? इन सब "अत्रियों" को हमसे दूर कर दो ? हमें जो कुछ चाहिये वह प्रकाश है। हमें प्रकाश दो, इस गुफा में चारों तरफ प्रकाश फैला दो ?

मैं पंचकोशों की अँधेरी गुहा में रह रहा हूँ-शरीर, प्राण, मन आदि के पाँच शरीरों में बंद पड़ा हुआ हूँ-अपने आपको भूल के इन शरीरों को आत्मा समझ रहा हूँ। इसलिए काम, क्रोध, लोभ आदि राक्षस मुझे खाए जा रहे हैं। ये काम, क्रोध आदि अज्ञान में ही रह सकते हैं। आत्मान्धकार में ही ये फलते-फूलते हैं। इसलिए हे प्राणो ? तुम मेरे गुहा के अंधकार को विलीन कर दो, अंधकार के हटने पर ये "अत्रि" अपने-आप ही यहाँ से भाग जाएँगे। जब हम में आत्म-ज्योति फैल जाएगी-सब भूतों, सब प्राणियों में, आत्मा दिखाई देने लगेगा तो हम किसके प्रति क्रोध करेंगे ? जब हमारा प्रेम सर्वव्यापक हो जाएगा तो हम किस एक में कामासक्त होंगे ? लोभ किसलिए करेंगे ? ओह, आत्म-ज्योति का प्रकाश हो जाने पर ये क्षुद्र "अत्रि" कहाँ ठहर सकते हैं ? आत्म-ज्योति वह ज्योति है जिससे सहस्त्रों सूर्य, चन्द्र और विद्युतें प्रकाशित हो रही हैं। जिस परमोज्ज्वल ज्योति के सामने हज़ारों सूर्यों की इकट्ठी ज्योति भी फीकी है-वह प्रकाश हमें दो। हम उस प्रकाश को पाने के लिए तड़प रहे हैं। उस प्रकाश के पा जाने पर तो सब-कुछ हो जाएगा, हृदय का अंधकार मिट जाएगा और इन खा-जानेवालों से हमारी रक्षा हो जायगी। हे प्राणो ? तुम प्रकाश के लानेवाले हो। हम जानते हैं कि तुम्हारे जागने पर प्रकाशावरण का क्षय हो जाता है-इस सत्य पर हमें विश्वास है। इसलिए हे प्राणो ? हम तुमसे विनय कर रहे हैं। तुम हममें समाकर हमारे प्रकाश का द्वार खोल दो।

-साभार वैदिक विनय, प्रस्तुति श्री रणजीत आर्य

बाल वैदिक सत्संग का शुभारम्भ

आर्य समाज फाजिलका ने गत वर्ष निश्चय किया था कि सभी स्थानीय डी. ए. वी. संस्थाओं के छात्र/छात्राएं प्रत्येक मास के सभी रविवारों के सत्संग का सम्पूर्ण कार्यक्रम क्रमश : स्वयं निभाएं। पदाधिकारी एवं आर्य सभासद् केवल उनका मार्ग निर्देशन करें। इसे सहर्ष स्वीकार करते हुए सभी स्कूलों के छात्र/छात्राओं ने इस कार्यक्रम को अत्यन्त कुशलता के साथ निभाया। जिसके लिए विद्यालय प्रमुख, शिक्षक, प्रशिक्षक तथा छात्र/छात्राएं सभी बधाई के पात्र हैं।

इसी श्रृंखला का शुभारम्भ पुन: अगस्त, 2013 से हो चुका है। सम्पूर्ण सत्संग का समय डेढ़ घण्टा निश्चित किया गया। पहला क्रम डी. ए. वी. सी. से स्कूल फाजिलका के नाम रहा। पुरोहित का उत्तरदायित्व सन्तोष तथा सुनील ने निभाया। यजमान मनु और गुरमेज बने। कन्या विभाग की छात्राओं ने भजन, वेदपाठ और आर्य समाज के नियम प्रस्तुत किए। वैदिक विचार के अन्तर्गत मनु ने ''दिव्य देव दयानन्द'' पर आधारित महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। सन्तोष, सुनील ने ''संगठन सूक्त'' का पाठ किया। शान्तिपाठ हरिरत्न और दीपक ने प्रस्तुत किया। अन्त में पूजा ने जयघोष लगा कर सभी में उत्साह का संचार कर दिया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर्य समाज के पूर्व प्रधान श्री सतीश चन्द्र आर्य ने की। उन्होंने अपने सम्बोधन में छात्र/छात्राओं की हवन-यज्ञ के प्रति असीम श्रुद्धा और शुद्ध उच्चारण की भूरि-भूरि प्रशंसा की। साथ ही निरन्तर आर्य समाज के सत्संग में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। प्रसाद वितरण के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

-वेदप्रकाश शास्त्री शास्त्री भवन, 4-E कैलाशनगर फाजिलका

गुरुकुल का आयुर्वेद महान
घर-घर में मिले रोगों से निदान

100 गुरुकुल शताब्दी

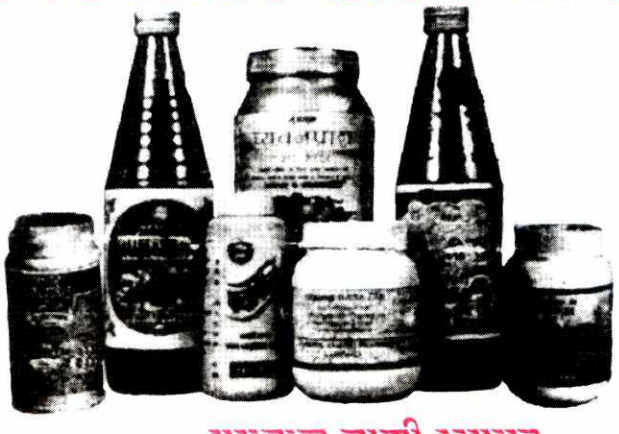

गुरुकुल च्वयनप्राश
सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल
पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी
पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

गुरुकुल ब्राह्मी रसायन
बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका
मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु
गुणवत्ता एवं ताज़गी के लिए

गुरुकुल चाय
खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद
गुरुकुल द्राक्षारिष्ठ
गुरुकुल रक्तशोधक
गुरुकुल अश्वगंधारिष्ट

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी, हरिद्वार डाकघर : गुरकुल कांगड़ी-249404, ज़िला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाज़ार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।